॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

CHANDAN TIWARI

15/12/1981 6:0 AM

Mumbai,Maharashtra India

सामान्य विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	15/12/1981
जन्म समय	6:0
जन्म स्थान	Mumbai,Maharashtra India
अक्षांश	25 N 19
देशांतर	82 E 20
समय क्षेत्र	5.5
अयनांश	23:36:17
सूर्योदय	06:38:26
सूर्यास्त	17:12:52

घात चक्र

महीना	पौष
तिथि	2,7,12
दिन	बुधवार
नक्षत्र	अनुराधा
योग	व्याघात
करण	नाग
प्रहर	1
चंद्र	12

पंचांग विवरण

तिथि	कृष्ण पंचमी
योग	वैधृ'
नक्षत्र	अश्लेषा
करण	कौलव

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
योनि	मार्जार
गण	राक्षस
नाड़ी	अंत
जन्म राशि	कर्क
राशि स्वामी	चन्द्र
नक्षत्र	अश्लेषा
नक्षत्र स्वामी	बुध
चरण	1
युञ्जा	मध्य
तत्त्व	जल
नामाक्षर	दी
पाया	चांदी
लग्न	वृश्चिक
लग्न स्वामी	मंगल

ग्रहस्तिथि

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य		वृश्चिक	29:20:39	मंगल	ज्येष्ठा	बुध	1
चन्द्र		कर्क	19:41:21	चन्द्र	अश्लेषा	बुध	9
मंगल		कन्या	05:55:57	बुध	उत्तरा फाल्गुनी	सूर्य	11
बुध		धनु	01:47:54	गुरु	मूल	केतु	2
गुरु		तुला	09:44:30	शुक्र	स्वाति	राहु	12
शुक्र		मकर	10:14:06	शनि	श्रावण	चन्द्र	3
शनि		कन्या	26:44:48	बुध	चित्रा	मंगल	11
राहु	R	कर्क	00:28:59	चन्द्र	पुनर्वसु	गुरु	9
केतु	R	मकर	00:28:59	शनि	उत्तराषाढ़ा	सूर्य	3
लग्न		वृश्चिक	19:56:53	मंगल	ज्येष्ठा	बुध	1

सूर्य
वृश्चिक
ज्येष्ठा

लाभप्रद

चन्द्र
कर्क
अश्लेषा

योगकारक

मंगल
कन्या
उत्तरा फाल्गुनी

सम

बुध
धनु
मूल

हानिप्रद

गुरु
तुला
स्वाति

लाभप्रद

शुक्र
मकर
श्रावण

हानिप्रद

शनि
कन्या
चित्रा

सम

राहु
कर्क
पुनर्वसु

--

केतु
मकर
उत्तराषाढ़ा

--

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

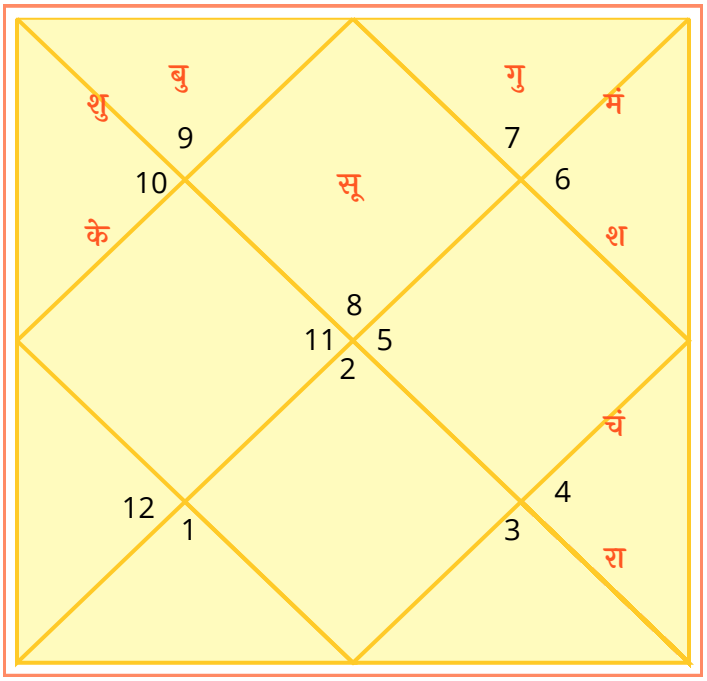

व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते है। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओ और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।

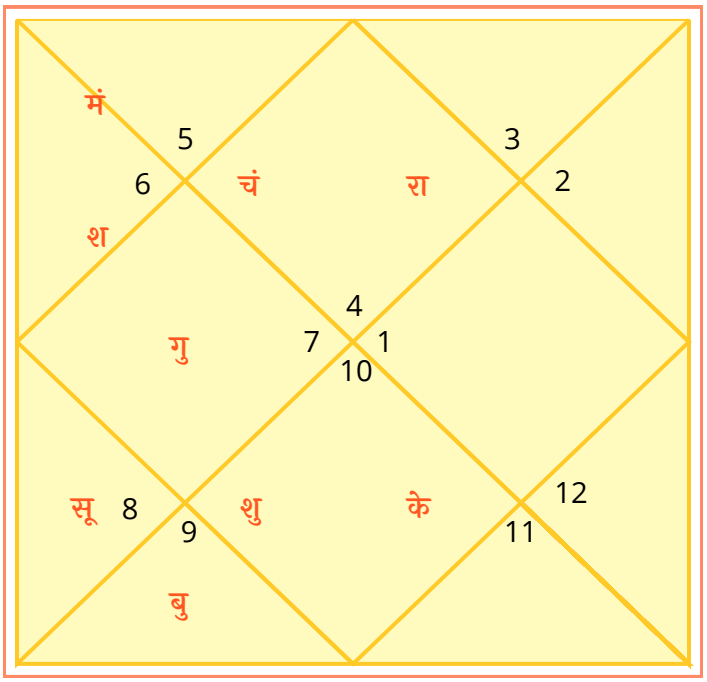

चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्त्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

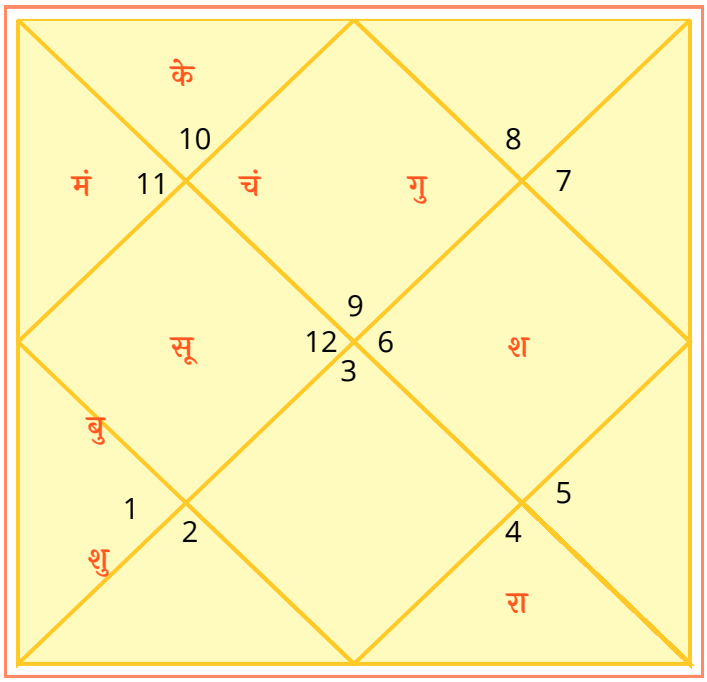

नवमांश कुंडली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

वर्ग कुंडली

सूर्य कुंडली

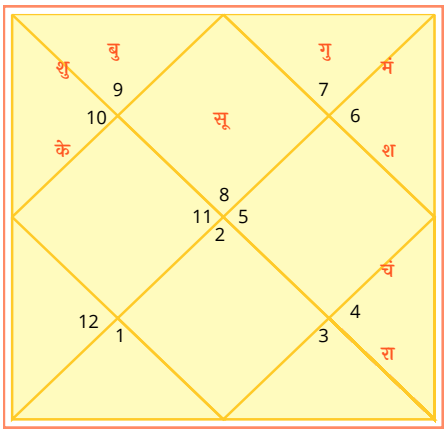

शरीर, स्वास्थ्य, रचना

होरा कुंडली

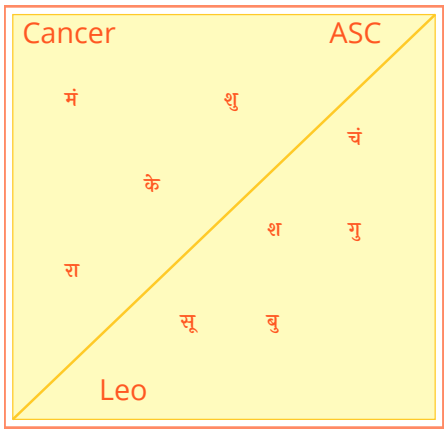

वित्त , धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली

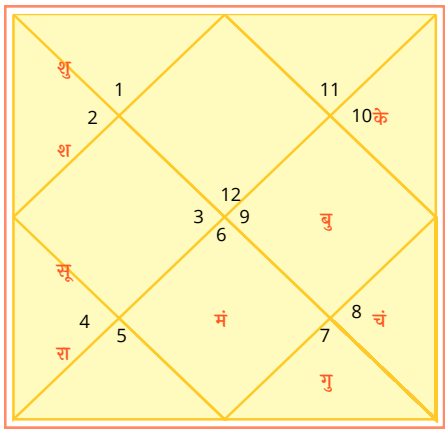

भाई बहन

चतुर्थांश कुंडली

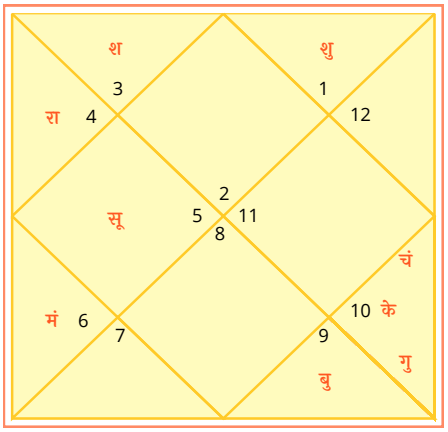

भाग्य

पंचमांश कुंडली

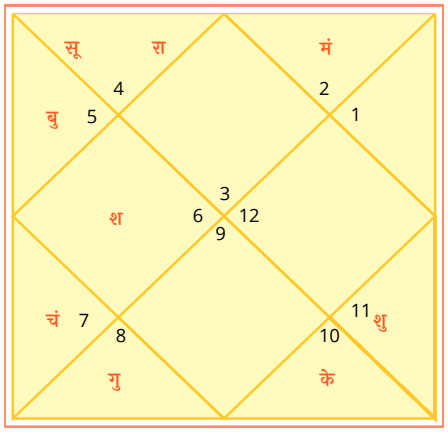

आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली

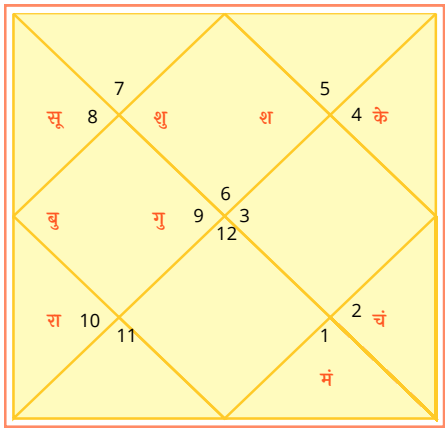

सन्तान

अष्टमांश कुंडली

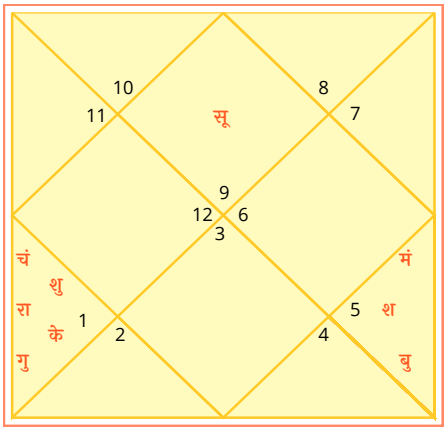

आयु

दशमांश कुंडली

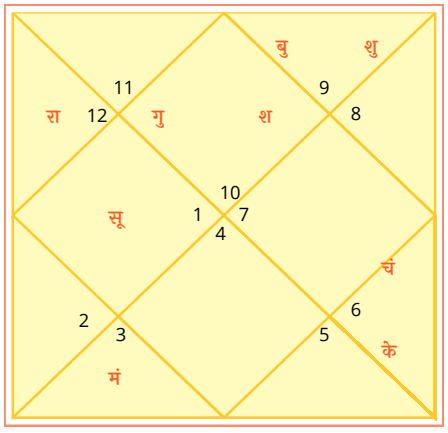

व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादशांश कुंडली

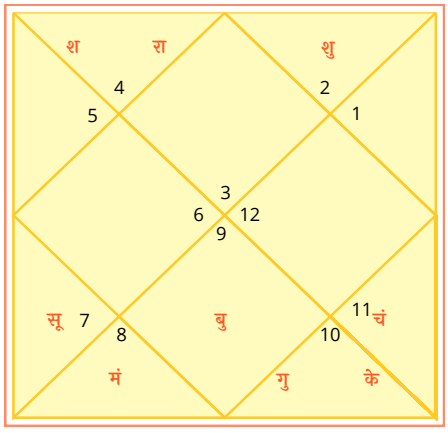

माता-पिता, पैतृक सुख

भाव सन्धि

लग्न - 19:56:53 **दशम भाव मध्य** - 29:14:28

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	वृश्चिक	19:56:53	धनु	06:29:49
2	धनु	23:02:45	मकर	09:35:40
3	मकर	26:08:36	कुम्भ	12:41:32
4	कुम्भ	29:14:28	मीन	12:41:32
5	मीन	26:08:36	मेष	09:35:40
6	मेष	23:02:45	वृष	06:29:49
7	वृष	19:56:53	मिथुन	06:29:49
8	मिथुन	23:02:45	कर्क	09:35:40
9	कर्क	26:08:36	सिंह	12:41:32
10	सिंह	29:14:28	कन्या	12:41:32
11	कन्या	26:08:36	तुला	09:35:40
12	तुला	23:02:45	वृश्चिक	06:29:49

चलित कुंडली

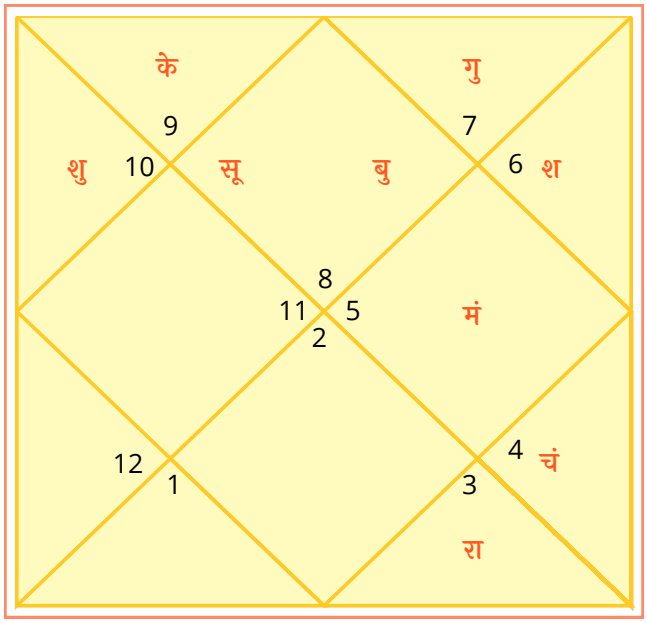

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।

विम्शोत्तरी दशा - I

बुध

6-2-1978 14:11
6-2-1995 20:11

बुध	5-7-1980 5:38
केतु	2-7-1981 10:35
शुक्र	2-5-1984 7:35
सूर्य	8-3-1985 18:41
चन्द्र	8-8-1986 5:11
मंगल	5-8-1987 10:8
राहु	21-2-1990 19:26
गुरु	29-5-1992 17:2
शनि	6-2-1995 20:11

केतु

6-2-1995 20:11
6-2-2002 14:11

केतु	5-7-1995 23:38
शुक्र	4-9-1996 2:38
सूर्य	9-1-1997 22:44
चन्द्र	11-8-1997 0:14
मंगल	7-1-1998 3:41
राहु	25-1-1999 15:59
गुरु	1-1-2000 13:35
शनि	9-2-2001 9:14
बुध	6-2-2002 14:11

शुक्र

6-2-2002 14:11
6-2-2022 14:11

शुक्र	8-6-2005 2:11
सूर्य	8-6-2006 8:11
चन्द्र	7-2-2008 2:11
मंगल	8-4-2009 5:11
राहु	7-4-2012 23:11
गुरु	7-12-2014 23:11
शनि	6-2-2018 14:11
बुध	7-12-2020 11:11
केतु	6-2-2022 14:11

सूर्य

6-2-2022 14:11
7-2-2028 2:11

सूर्य	27-5-2022 3:59
चन्द्र	25-11-2022 18:59
मंगल	2-4-2023 15:5
राहु	25-2-2024 8:29
गुरु	13-12-2024 13:17
शनि	25-11-2025 12:59
बुध	2-10-2026 0:5
केतु	6-2-2027 20:11
शुक्र	7-2-2028 2:11

चन्द्र

7-2-2028 2:11
6-2-2038 14:11

चन्द्र	7-12-2028 11:11
मंगल	8-7-2029 12:41
राहु	7-1-2031 9:41
गुरु	8-5-2032 9:41
शनि	7-12-2033 17:11
बुध	9-5-2035 3:41
केतु	8-12-2035 5:11
शुक्र	7-8-2037 23:11
सूर्य	6-2-2038 14:11

मंगल

6-2-2038 14:11
6-2-2045 8:11

मंगल	5-7-2038 17:38
राहु	24-7-2039 5:56
गुरु	29-6-2040 3:32
शनि	7-8-2041 23:11
बुध	5-8-2042 4:8
केतु	1-1-2043 7:35
शुक्र	2-3-2044 10:35
सूर्य	8-7-2044 6:41
चन्द्र	6-2-2045 8:11

विम्शोत्तरी दशा - II

राहु		गुरु		शनि	
6-2-2045 8:11 6-2-2063 20:11		6-2-2063 20:11 6-2-2079 20:11		6-2-2079 20:11 6-2-2098 14:11	
राहु	20-10-2047 12:23	गुरु	27-3-2065 0:59	शनि	9-2-2082 15:14
गुरु	15-3-2050 2:47	शनि	8-10-2067 8:11	बुध	19-10-2084 18:23
शनि	19-1-2053 1:53	बुध	13-1-2070 5:47	केतु	28-11-2085 14:2
बुध	8-8-2055 11:11	केतु	20-12-2070 3:23	शुक्र	28-1-2089 5:2
केतु	25-8-2056 23:29	शुक्र	20-8-2073 3:23	सूर्य	10-1-2090 4:44
शुक्र	26-8-2059 17:29	सूर्य	8-6-2074 8:11	चन्द्र	11-8-2091 12:14
सूर्य	20-7-2060 10:53	चन्द्र	8-10-2075 8:11	मंगल	19-9-2092 7:53
चन्द्र	19-1-2062 7:53	मंगल	13-9-2076 5:47	राहु	27-7-2095 6:59
मंगल	6-2-2063 20:11	राहु	6-2-2079 20:11	गुरु	6-2-2098 14:11

वर्त्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	सम्पति तिथि
महादशा	शुक्र	6-2-2002 14:11	6-2-2022 14:11
अंतर्दशा	शनि	7-12-2014 23:11	6-2-2018 14:11
प्रत्यंतर दशा	राहु	15-3-2017 21:8	5-9-2017 8:59
सूक्ष्म दशा	गुरु	10-4-2017 21:43	4-5-2017 0:54

* ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।

योगिनी दशा - I

भ्रामरी (4 वर्ष)

18-1-1981 8:52
18-1-1985 8:52

भ्रामरी	29-6-1981 16:52
भद्रिका	18-1-1982 14:52
उल्का	19-9-1982 2:52
सिद्धि	30-6-1983 4:52
संकटा	19-5-1984 20:52
मंगला	29-6-1984 10:52
पिंगला	18-9-1984 14:52
धान्या	18-1-1985 8:52

भद्रिका (5 वर्ष)

18-1-1985 8:52
18-1-1990 8:52

भद्रिका	29-9-1985 0:22
उल्का	30-7-1986 9:22
सिद्धि	20-7-1987 11:52
संकटा	29-8-1988 7:52
मंगला	19-10-1988 1:22
पिंगला	28-1-1989 12:22
धान्या	29-6-1989 16:52
भ्रामरी	18-1-1990 8:52

उल्का (6 वर्ष)

18-1-1990 8:52
18-1-1996 8:52

उल्का	18-1-1991 14:52
सिद्धि	19-3-1992 17:52
संकटा	19-7-1993 17:52
मंगला	18-9-1993 14:52
पिंगला	18-1-1994 8:52
धान्या	19-7-1994 23:52
भ्रामरी	20-3-1995 11:52
भद्रिका	18-1-1996 8:52

सिद्धि (7 वर्ष)

18-1-1996 8:52
18-1-2003 8:52

सिद्धि	29-5-1997 12:22
संकटा	18-12-1998 16:22
मंगला	27-2-1999 16:52
पिंगला	19-7-1999 17:52
धान्या	17-2-2000 19:22
भ्रामरी	27-11-2000 21:22
भद्रिका	17-11-2001 23:52
उल्का	18-1-2003 8:52

संकटा (8 वर्ष)

18-1-2003 8:52
18-1-2011 8:52

संकटा	28-10-2004 16:52
मंगला	17-1-2005 20:52
पिंगला	29-6-2005 4:52
धान्या	27-2-2006 16:52
भ्रामरी	18-1-2007 8:52
भद्रिका	28-2-2008 4:52
उल्का	29-6-2009 4:52
सिद्धि	18-1-2011 8:52

मंगला (1 वर्ष)

18-1-2011 8:52
18-1-2012 8:52

मंगला	28-1-2011 12:22
पिंगला	17-2-2011 19:22
धान्या	20-3-2011 5:52
भ्रामरी	29-4-2011 19:52
भद्रिका	19-6-2011 13:22
उल्का	19-8-2011 10:22
सिद्धि	29-10-2011 10:52
संकटा	18-1-2012 8:52

योगिनी दशा - II

पिंगला (2 वर्ष)

18-1-2012 8:52
18-1-2014 8:52

पिंगला	27-2-2012 22:52
धान्या	28-4-2012 19:52
भ्रामरी	18-7-2012 23:52
भद्रिका	28-10-2012 10:52
उल्का	27-2-2013 4:52
सिद्धि	19-7-2013 5:52
संकटा	28-12-2013 13:52
मंगला	18-1-2014 8:52

धान्या (3 वर्ष)

18-1-2014 8:52
18-1-2017 8:52

धान्या	19-4-2014 16:22
भ्रामरी	19-8-2014 10:22
भद्रिका	18-1-2015 14:52
उल्का	20-7-2015 5:52
सिद्धि	18-2-2016 7:22
संकटा	18-10-2016 19:22
मंगला	18-11-2016 5:52
पिंगला	18-1-2017 8:52

भ्रामरी (4 वर्ष)

18-1-2017 8:52
18-1-2021 8:52

भ्रामरी	29-6-2017 16:52
भद्रिका	18-1-2018 14:52
उल्का	19-9-2018 2:52
सिद्धि	30-6-2019 4:52
संकटा	19-5-2020 20:52
मंगला	29-6-2020 10:52
पिंगला	18-9-2020 14:52
धान्या	18-1-2021 8:52

भद्रिका (5 वर्ष)

18-1-2021 8:52
18-1-2026 8:52

भद्रिका	29-9-2021 0:22
उल्का	30-7-2022 9:22
सिद्धि	20-7-2023 11:52
संकटा	29-8-2024 7:52
मंगला	19-10-2024 1:22
पिंगला	28-1-2025 12:22
धान्या	29-6-2025 16:52
भ्रामरी	18-1-2026 8:52

उल्का (6 वर्ष)

18-1-2026 8:52
18-1-2032 8:52

उल्का	18-1-2027 14:52
सिद्धि	19-3-2028 17:52
संकटा	19-7-2029 17:52
मंगला	18-9-2029 14:52
पिंगला	18-1-2030 8:52
धान्या	19-7-2030 23:52
भ्रामरी	20-3-2031 11:52
भद्रिका	18-1-2032 8:52

सिद्धि (7 वर्ष)

18-1-2032 8:52
18-1-2039 8:52

सिद्धि	29-5-2033 12:22
संकटा	18-12-2034 16:22
मंगला	27-2-2035 16:52
पिंगला	19-7-2035 17:52
धान्या	17-2-2036 19:22
भ्रामरी	27-11-2036 21:22
भद्रिका	17-11-2037 23:52
उल्का	18-1-2039 8:52

योगिनी दशा - III

संकटा (8 वर्ष)

18-1-2039 8:52
18-1-2047 8:52

संकटा	28-10-2040 16:52
मंगला	17-1-2041 20:52
पिंगला	29-6-2041 4:52
धान्या	27-2-2042 16:52
भ्रामरी	18-1-2043 8:52
भद्रिका	28-2-2044 4:52
उल्का	29-6-2045 4:52
सिद्धि	18-1-2047 8:52

मंगला (1 वर्ष)

18-1-2047 8:52
18-1-2048 8:52

मंगला	28-1-2047 12:22
पिंगला	17-2-2047 19:22
धान्या	20-3-2047 5:52
भ्रामरी	29-4-2047 19:52
भद्रिका	19-6-2047 13:22
उल्का	19-8-2047 10:22
सिद्धि	29-10-2047 10:52
संकटा	18-1-2048 8:52

पिंगला (2 वर्ष)

18-1-2048 8:52
18-1-2050 8:52

पिंगला	27-2-2048 22:52
धान्या	28-4-2048 19:52
भ्रामरी	18-7-2048 23:52
भद्रिका	28-10-2048 10:52
उल्का	27-2-2049 4:52
सिद्धि	19-7-2049 5:52
संकटा	28-12-2049 13:52
मंगला	18-1-2050 8:52

धान्या (3 वर्ष)

18-1-2050 8:52
18-1-2053 8:52

धान्या	19-4-2050 16:22
भ्रामरी	19-8-2050 10:22
भद्रिका	18-1-2051 14:52
उल्का	20-7-2051 5:52
सिद्धि	18-2-2052 7:22
संकटा	18-10-2052 19:22
मंगला	18-11-2052 5:52
पिंगला	18-1-2053 8:52

*** ध्यान दें - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।**

शुभाशुभ अंक

1	6	5
भाग्यांक	मूलांक	नामांक

आपका नाम	Chandan Tiwari
जन्म दिनांक	15-12-1981
मूलांक	6
मूलांक स्वामी	शुक्र
मित्र अंक	4,3,9
सम अंक	2,5,7
शत्रु अंक	1,8
शुभ दिन	गुरुवार, मंगलवार, शुक्रवार
शुभ रत्न	हीरा, ओपल
शुभ उपरत्न	जिरकॉन , सफेद नीलम
शुभ देवता	देवी
शुभ धातु	चांदी
शुभ रंग	सफेद
शुभ मंत्र	||ओम शुम शुक्राय नमः ||

अंक ज्योतिषीय फल

6

आपके बारे में

आपका मूलांक छः है। इसका अधिष्ठाता शुक्र ग्रह है। मूलांक छः के प्रभाववश आप के अन्दर आकर्षण शक्ति तथा मिलन सारिता अधिक रहेगी। इस गुण के कारण आप लोक प्रियता प्राप्त करेंगे। सुन्दरता, सुन्दर वस्तुओं की ओर आकृष्ट होना आपकी सहज प्रवृत्ति होगी। विपरीत सेक्स के प्रति आपका आकर्षण रहेगा एवं सुन्दर नर-नारियों से संबंध बनाना, वार्तालाप करना आपकी प्रकृति में रहेगा।

विभिन्न कलाओं के क्षेत्र में आपकी अभिरुचि रहेगी एवं कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार-व्यापार भी बना सकते हैं। संगीत-साहित्य, ललितकला, चित्रकला इत्यादि में रुचि रखेंगे। सुन्दर वस्त्र धारण करना एवं सुसज्जित मकान में रहना आपको अच्छा लगेगा।

अतिथियों का आदर सत्कार करने में आपको गर्व महसूस होगा। घर या कार्यालय में सभी वस्तुऐं ढंग से सजावट के साथ रखना, सुरुचिपूर्ण फर्नीचर, परदे इत्यादि रखना आपको रास आयेगा।

स्वभाव में आपके थोड़ा हठीपन रहेगा एवं आपकी हमेशा यही कोशिश रहेगी कि आपकी बात को सामने वाला मान जाया करे। किसी बात पर अड़े रहना तथा ईर्ष्या की मात्रा आपके अन्दर अधिक रहेगी। आप कार्यक्षेत्र में किसी की प्रतिद्वन्दिता को आसानी से सहन नहीं कर पायेंगे। जिसके कारण कभी-कभी मानसिक तनाव एवं आत्मग्लानि का भी सामना करना पड़ेगा। आप दूसरों को अपना बना लेने की कला में पारंगत रहेंगे। शीघ्र मित्र बनाने की कला आपके अन्दर अधिक मात्रा में होने से आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी।

आपके के लिए शुभ समय

शुक्र दिनांक 21 अप्रैल से 21 मई तक तथा 24 सितंबर से 13 अक्तूबर तक सूर्य, पाश्चात्यमतानुसार, वृष तथा तुला राशि में रहता है, जो भारतीय मतानुसार 13 मई से 14 जून तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक का समय होता है।

यह शुक्र की स्वराशि है। 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि से शुक्र उच्च का होता है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक छह के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

शुभ गायत्री मंत्र

आपके लिए शुक्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, शुक्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शुक्र गायत्री मंत्र -

||ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।||

कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प योग सुनकर भयभीत हो जाने की जरुरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके प्रभावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमत्ता कही जायेगी। कालसर्प दोष कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्ध योग भी बन सकता है।

अनन्त	कुलिक	वासुकी	शंखपाल
पद्म	महापद्म	तक्षक	कर्कोटक
शंखचूड़	घातक	विषधर	शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

कालसर्प की उपस्थिति

आपकी जन्मपत्रिका में अनुदित रुप में कालसर्प दोष विद्यमान है।

आपकी कुंडली में कालसर्प दोष पूर्ण रुप से विद्यमान एवं प्रबल है।

कालसर्प नाम

शंखचूड़

दिशा

पूर्ण अनुदित

कालसर्प दोष का प्रभाव

कालसर्प दोष फल

आपकी जन्मपत्रिका में शंखचूड़ नामक कालसर्प योग बन रहा है।
केतु तीसरे स्थान में व राहु नवम स्थान में शंखचूड़ नामक कालसप्र योग बनता है। इस योग से पीड़ित जातकों का भाग्योदय होने में अनेक प्रकार की अड़चने आती रहती हैं। व्यावसायिक प्रगति, नौकरी में प्रोन्नति तथा पढ़ाई-लिखाई में वांछित सफलता मिलने में जातकों को कई प्रकार के विघ्नों का सामना करना पड़ता है। इसके पीछे कारण वह स्वयं होता है क्योंकि वह अपनो का भी हिस्सा छिनना चाहता है। अपने जीवन में धर्म से खिलवाड़ करता है। इसके साथ ही उसका अपना अत्याधिक आत्मविश्वास के कारण यह सारी समस्या उसे झेलनी पड़ती है। अधिक सोच के कारण शारीरिक व्याधियां भी उसका पीछा नहीं छोड़ती। इन सब कारणों के कारण सरकारी महकमों व मुकदमेंबाजी में भी उसका धन खर्च होता रहता है। उसे पिता का सुख तो बहुत कम मिलता ही है, वह ननिहाल व बहनोइयों से भी छला जाता है। उसके मित्र भी धोखाबाजी करने से बाज नहीं आते। उसका वैवाहिक जीवन आपसी वैमनस्यता की भेंट चढ़ जाता है। उसे हर बात के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है। उसे समाज में यथेष्ट मान-सम्मान भी नहीं मिलता।

कालसर्प दोष के उपाय

- कालसर्प दोष निवारण यन्त्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।

- हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

- रुद्राभिषेक - भगवान शिव का रुद्राभिषेक अथवा पंचोपचार पूजन उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर या किसी ज्योतिर्लिंग शिव मंदिर में करें।

- शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।

- विद्यार्थीजन सरस्वती जी के बीज मंत्रों का एक वर्ष तक जाप करें और विधिवत उपासना करें।

- महामृत्युंजय मंत्रों का जाप प्रतिदिन 11 माला रोज करें, जब तक राहु केतु की दशा-अंर्तदशा रहे और हर शनिवार को श्री शनिदेव का तैलाभिषेक करें और मंगलवार को हनुमान जी को चौला चढ़ायें।

- श्रावणमास में 30 दिनों तक महादेव का अभिषेक करें।

- एक वर्ष तक गणपति अथर्वशीर्ष का नित्य पाठ करें।

- श्रावण के महीने में प्रतिदिन स्नानोपरांत 11 माला 'नम: शिवाय' मंत्रा का जप करने के उपरांत शिवजी को बेलपत्रा व गाय का दूध तथा गंगाजल चढ़ाएं तथा सोमवार का व्रत करें।

मांगलिक विश्लेषण - I

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे |
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ||

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	18%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है । कुछ साधारण उपायो की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।

मांगलिक विश्लेषण - II

भाव के आधार पर

सूर्य लग्न भाव में कुंडली में स्थित है।

दृष्टि के आधार पर

शनि , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को शनि देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को राहु देख रहा है।

मंगल की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

सप्तम भाव सूर्य से दृष्ट है।

सप्तम भाव केतु से दृष्ट है।

मांगलिक दोष के उपाय

- चांदी की चौकोर डिब्बी में शहद भरकर हनुमान मंदिर या किसी निर्जन वन, स्थान में रखने से मंगल दोष शांत होता है |

- मंगलवार को सुन्दरकाण्ड एवं बालकाण्ड का पाठ करना लाभकारी होता है |

- बंदरों व कुत्तों को गुड व आटे से बनी मीठी रोटी खिलाएं |

- मंगल चन्द्रिका स्तोत्र का पाठ करना भी लाभ देता है |

- माँ मंगला गौरी की आराधना से भी मंगल दोष दूर होता है |

- कार्तिकेय जी की पूजा से भी मंगल दोष के दुशप्रभाव में लाभ मिलता है |

- मंगलवार को बताशे व गुड की रेवड़ियाँ बहते जल में प्रवाहित करें |

- मंगली कन्यायें गौरी पूजन तथा श्रीमद्भागवत के 18 वें अध्याय के नवें श्लोक का जप अवश्य करें |

साढ़ेसाती विश्लेषण

साढ़ेसाती क्या होता है

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार साढ़े साती तब बनती है जब शनि गोचर में जन्म चन्द्र से प्रथम, द्वितीय और द्वादश भाव से गुजरता है। शनि एक राशि से गुजरने में ढ़ाई वर्ष का समय लेता है इस तरह तीन राशियों से गुजरते हुए यह साढ़े सात वर्ष का समय लेता है जो साढ़े साती कही जाती है। सामान्य अर्थ में साढ़े साती का अर्थ हुआ सात वर्ष छ: मास।

साढ़े साती के समय व्यक्ति को कठिनाईयों एवं परेशानियों का सामना करना होता है परंतु इसमें घबराने वाली बात नहीं हैं। इसमे कठिनाई और मुश्किल हालत जरूर आते हैं परंतु इस दौरान व्यक्ति को कामयाबी भी मिलती है। बहुत से व्यक्ति साढ़े साती के प्रभाव से सफलता की उंचाईयों पर पहुंच जाते हैं। साढ़े साती व्यक्ति को कर्मशील बनाता है और उसे कर्म की ओर ले जाता है। हठी, अभिमानी और कठोर व्यक्तियों से यह काफी मेहनत करवाता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने का दिनाकं	23-4-2017
शनि राशि	धनु
चंद्र राशि	कर्क
वक्री शनि ?	हाँ

रत्न उपाय विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों से सूक्ष्म ऊर्जाओं का उत्सर्जन होता है, जिनका हमारी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्तिथि के अनुसार, हमारे जीवन पर प्रतिवर्ती हितकारी अथवा अनिष्टकारी प्रभाव पड़ते हैं । प्रत्येक ग्रह का अपना एक अनूठा तत्सम्बन्धित ज्योतिषीय रत्न होता है जो उसी ग्रह के अनुरूप ब्रह्मांडीय वर्ण-ऊर्जा का प्रसार करता है । रत्न सकारात्मक किरणों के प्रतिबिंब या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा अपना कार्य करते हैं । ये रत्न केवल सकारात्मक स्पंदनों को ही शरीर में प्रवेश करने देते हैं; इस कारण उपयुक्त रत्न पहनाने से उसके धारण कर्ता पर सम्बंधित ग्रह के लाभदायक प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है ।

जीवन रत्न

मूंगा

लग्न, शरीर और शरीर से संबंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, दीर्घायु, नाम, प्रतिष्ठा, जीवन-उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है । इसलिए लग्न के स्वामी अर्थात लग्नेश से संबंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है । इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए ।

कारक रत्न

पुखराज

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अप्रत्याशित धन-प्राप्ति आदि का द्योतक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अर्थात पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है । इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं । पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

मोती

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है । यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का द्योतक है । यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किए गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है । नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं । इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है ।

जीवन रत्न

जीवन रत्न - मूंगा

विकल्प	लाल सुलेमानी	दिन	मंगलवार
उंगली	तर्जनी	अधिदेवता	मंगल
भार	6 - 10.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

लाल मूंगा का स्वामी ग्रह मंगल है । लाल मूंगा व्यक्ति को साहसी बनाता है और उसकी अपने दुश्मनों को पछाड़ने में सहायता करता है । लाल मूंगा दुष्ट आत्माओं, जादू-टोना और बुरे स्वप्नों से बचाता है ।

भार व धातु

लाल मूंगा का वजन ६ कैरेट से अधिक होना चाहिए । इसे सोने और तांबे के मिश्रण से बनी अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

लाल मूंगा रत्न चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी मंगलवार को सूर्योदय के एक घंटे बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । लाल मूंगा धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

लाल मूंगा की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, लाल मूंगे की अंगूठी को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

लाल मूंगा के स्थान पर संग मुंगी (संग-सितारा), कार्नेलियन और रेड जास्पर (सूर्यकांत मणि) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि लाल मूंगे को पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

कारक रत्न

कारक रत्न - पुखराज

विकल्प	टोपाज	दिन	गुरुवार
उंगली	तर्जनी	अधिदेवता	गुरु
भार	4 - 5.25 कैरेट	धातु	स्वर्ण

विवरण

पुखराज रत्न का स्वामी ग्रह बृहस्पति (गुरु) है । शुद्ध पुखराज दोषरहित , चमकदार, दीप्तिमान, स्पर्श करने में चिकना और उत्तम वर्ण का होता हैं । पुखराज धारण करने से अच्छे स्वास्थ्य, ज्ञान, संपत्ति, दीर्घायु, नाम, सम्मान और यश की प्राप्ति होती है । यह बुरी आत्माओं के कुप्रभाव से भी रक्षा करता है ।

भार व धातु

पुखराज का वजन ३ कैरेट से अधिक होना चाहिए; परंतु ६, ११ अथवा १५ कैरेट का न हो इस बात का ध्यान रखें । इसे सोने की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

पुखराज रत्न को चंद्रमास के शुक्ल पक्ष के किसी भी गुरुवार की सुबह धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । पुखराज धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः

प्राण प्रतिष्ठा

पुखराज की अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, पुखराज को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) में धारण करें ।

विकल्प

पुखराज के स्थान पर पीला मोती, पीला जिक्रोन, पीली तूरमली, टोपाज़ और सिट्रीन (क्वार्ट्ज़ टोपाज़) जैसे विभिन्न विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं ।

सावधानी

ध्यान रहें कि पुखराज को हीरे, नीलम, गोमेद और लहसुनिया के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

भाग्य रत्न

भाग्य रत्न - मोती

विकल्प	चंद्रमणि	दिन	सोमवार
उंगली	अनामिका या कनिष्ठा	अधिदेवता	चंद्रमा
भार	5 - 7.25 कैरेट	धातु	

विवरण

मोती रत्न का स्वामी ग्रह चंद्र है । मोती धारण करने से धन, प्रसिद्धि और जीवन-शक्ति की प्राप्ति होती है । मोती धारण करने वाला व्यक्ति मेधावी होता है और दीर्घ जीवन जीता है।

भार व धातु

वजन में २, ४, ६ या ११ कैरेट का दोषरहित मोती पहनना चाहिए । इसे चांदी की अंगूठी में जड़ा जाना चाहिए । अंगूठी की बनावट इस प्रकार की हो कि रत्न त्वचा को छू सके ।

पहनने का समय

मोती को शुक्ल पक्ष के किसी भी सोमवार को सूर्योदय के बाद धारण किया जा सकता है ।

मंत्र

प्राण प्रतिष्ठा के पश्चात इस रत्न की फूलों और धूप-बत्ती के साथ पूजा करें । मोती धारण करने के लिए निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जाप करें

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः

प्राण प्रतिष्ठा

अंगूठी पहनने से पहले, इसे कच्चे दूध या गंगा जल में कुछ समय के लिए डुबो कर रखें ।

उंगली

मंत्र जाप के बाद, मोती को दाहिने हाथ की अनामिका (रिंग फिंगर) अथवा कनिष्ठा अंगुली में धारण किया जा सकता है।

विकल्प

मोती के स्थान पर चन्द्रकान्त मणि या सफ़ेद नीलम जैसे विकल्प रत्न भी उपयोग में लाये जा सकते हैं।

सावधानी

ध्यान रहें कि मोती को हीरा, नीलम, पन्ना, लहसुनिया और उनके विकल्प रत्नों के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

लग्न फल - वृश्चिक

स्वामी	मंगल
प्रतीक	बिच्छू
विशेषताएँ	जल तत्त्व, स्थिर, उत्तर
भाग्यशाली रत्न	मूंगा
व्रत का दिन	मंगलवार

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम् |
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभावान्निरीक्षयेत ||

वृश्चिक राशि के व्यक्ति का स्वभाव अपनी बातों को छिपाकर रखने का होता है,वे गंभीर, रचनात्मक या विनाशक, संकोची, नैतिकतावादी अथवा निम्न आचरण करने वाले, समझने में मुश्किल,अनवरत, साहसी, विचारधारा में जिद्दी, स्वेछाचारी , रचनात्मक, आत्मनिर्भर, स्व-नियंत्रित (भावावेश की अवस्था को छोड़कर) और मौन रहने वाले होते हैं ।

आध्यात्मिक ज्योतिषी इसाबेल हिक्की के अनुसार, कोई अपरिपूर्ण आत्मा वृश्चिक राशि में पैदा नहीं होती है। यह एक उर्जावान और तेजस्वी राशि मानी जाती है। यह राशि एक रणभूमि का प्रतिनिधित्व करती है जहां उच्च और निम्न स्तर के अंतर्मन को निर्णायक युद्ध के लिए आना ही पड़ता है ।

> " ये दोनों तरह के अंतर्मन अर्थात अच्छाई और बुराई एक साथ चलते हैं और अंत में बुराई मर जाती हैं और अंतरात्मा अच्छाई के रास्ते पर चलती है और उसका पालन करती है । इसमे शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तर सभी शामिल हैं।,आप बाहर से शांत दिखाई देते हैं, लेकिन आप अंदर से बेहद भावुक हो सकते हैं ।

कहावत भी है , 'धीर सो गंभीर' । आप शांत स्वभाव के हैं ,हमेशा दूसरों की नीयत के विषय में जानने को इच्छुक रहते है, लेकिन कभी भी अपने इरादे दूसरों नहीं बताते। आप ख़ुफ़िया कार्यों या खोजी कार्यों को करना पसंद करते है ।

आप सब कुछ जानकार ही रहते हैं,कि कैसे हुआ और क्यूँ हुआ । आप के अन्दर पर्याप्त महान दृढ़ संकल्प और शक्ति है

जिससे आप किसी भी विरोधी पर,यहाँ तक कि स्वयं पर भी विजय पा सकते हैं ।

आप को असंतोष, अधिकार की भावना और ईर्ष्या से उबरने की जरूरत है। आपके अन्दर आकर्षण और तन्मयता हैं, तंत्र-मन्त्र, मृत्यु, सेक्स या चिकित्सा में रुचि या उन्हे करने की क्षमता है। आप एक राक्षस या देवदूत हो सकते हैं ,एक बाज़ की तरह या चुभते बिच्छू की तरह भी हो सकते हैं।

> "मंगल और प्लूटो वृश्चिक राशि के स्वामी हैं अतः आपकी कुंडली में मंगल और प्लूटो महत्वपूर्ण होंगे।

ॐ

सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

क्षमा

सकारात्मक लक्षण

प्रभावशाली | प्रतिबद्ध | बुद्धिमान | कल्पनाशील

नकारात्मक लक्षण

ईर्षालु | निर्मम | असहयोगी | गोपनीय

Vedic Rishi Astro Pvt. Ltd.

Vedic Rishi does all the complex astronomical and algorithmic calculations for your astrology websites or astro-matching apps and provides you with simple APIs to create awesome user interfaces for your users

Website	:	https://www.vedicrishiastro.com
Email	:	mail@vedicrishiastro.com
Mobile	:	+91 1212 1212 12
Ladline	:	+91- 221232 22